REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

बिहार में रेशम वस्त्र उद्योगः एक अध्ययन

डॉ. मनोज कुमार
एम० ए०, बी० एड०, पी–एच० डी०,नेट,
+2 शिक्षक, उच्च विद्यालय, खिरहर.

भूमिकाः–

भारत विश्व में चीन के बाद दूसरा संवैधिक रेशम उत्पादन करने वाला देश है। यहां रेशम के कीड़े पालने तथा उनसे प्राप्त रेशम से वस्त्र बनाने का धन्धा अति प्राचीन काल से होता आया है। प्राचीन एवं मध्यकाल में भारत से यूरोप एवं एशिया के विभिन्न देशों में उत्तम किस्म के रेशमी वस्त्रों का निर्यात होता था। मुगलकाल में रेशम उद्योग काफी उन्नत अवस्था में था परंतु उस समय तक एक कुटीर उद्योग के रूप में विकसित था।

दे में आधुनिक ढंग से रेशमी वस्त्रा बनाने के प्रथम कारखाने की स्थापना 1852 ई0 में हावड़ा में की गई। इसके पश्चात 1857 ई0 में मैसूर (कर्नाटक) में तथा 1892 में काश्मीर में भी रेशम उद्योग के कारखाने लगाए गए। 19वीं शताब्दी के अंत तक इस उद्योग का पर्याप्त विकास हुआ। परंतु 1875 से 1925 ई0 के मध्य रेशम में लगने वाले पेवाइन नामक रोग के कारण इस उद्योग को काफी क्षति उठानी पड़ी। इसके बाद यह उद्योग उत्तरोतर प्रगति करता गया। 1935 ई0 में सरकार द्वारा संरक्षण दिये जाने पर यह उद्योग तीव्र गति से उन्नति करने लगा, जिसके फलस्वरूप देश में 1939 में रेशमी वस्त्र के कारखानों की संख्या 12 हो गयी। रेशम वस्त्र उद्योग को और अधिक प्रगति का अवसर प्रदान हुआ। फलतः 1943 में कारखानों की संख्या बढ़कर 126 हो गयी।

स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात रेशम उद्योग

स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात रेशम उद्योग के नियोजित विकास हेतु 1949 ई0 में केन्द्रीय रेशम बोर्ड की स्थापना की गई। इसके प्रमुख उद्देश्य उत्तम किस्म के रेशम के कीड़ों का विकास करना था। उन्हें देश के विभिन्न भागों में वितरित करना था। उद्योग से संबंधित आवश्यक अनुसंधान कार्य तथा इस उद्योग के विकास हेतु सुझाव प्रस्तुत करना था। इसके साथ ही श्रीनगर चन्नपटना, बहरामपुर, भागलपुर, नजरावाद, हिटावर में तकनीकी प्रशिक्षण केन्द्र भी खोले गए। वर्तमान में देश में रेशम वस्त्रा बनाने के लगभग 200 कारखाने है। जिनमें लगभ्झग 1.5 लाख तक कुएं संस्थापित है। इसके अतिरिक्त सैकड़ों छोटी–मोटी कुटीर इकाईयों के रूप में भी रेशम तथा रेशमी वस्त्र तैयार करने का कार्य किया जाता है। इस उद्योग से लगभग 50 लाख लोगों को रोजगार प्राप्त होता है।

भारत संसार का एक मात्र ऐसा देश है जहाँ प्राकृतिक रेशम की चारों किस्मों का उत्पादन होता है। उन्हें शहतूती और गैर शहतूती किस्मों में वर्गीकृत किया जा सकता है। गैर शहतूती रेशम की तीन किस्में तसर मलबरी और मूंगा होती है। देश के कुल उत्पादन में 90 प्रतिशत भाग शहतूती रेशम तथा 10 प्रतिशत अन्य किस्मों के रेशम का होता है। बिहार राज्य में केवल तसर तथा मलबरी रेशम का उत्पादन होता है तशर रेशम के उत्पादन में यह राज्य देश भर में अग्रणी है। रांची, हजारीबाग, संथालपरगना, पलामू, धनबाद जिले तसर रेशम के प्रधान उत्पादक क्षेत्रा हैं। भागलपुर, डालटेनगंज रेशमी वस्त्र उत्पादन के प्रमुख केन्द्र है। बिहार में रेशम उद्योग प्राचीन और मध्य काल में फलता–फूलता रहा है। चूंकि रेशमी वस्त्र कीमती होते हैं। अतः इनका

प्रयोग उच्च वर्गो समृद्ध लोगों तक ही सीमित था। रेशमी वस्त्रों को धारण करना प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता था। मुगल शासकों में रेशमी वस्त्रों के प्रति काफी आकर्षण रहता था। 'ममांलिक उल अमसार' के लेखक शिहाबुधीन अल उमरी ने चौदहवीं सदी के पूर्वार्द्ध में राजाजाय रेशम के वस्त्रों पर होने वाले कार्यो का उल्लेख किया है। उसके अनुसार सुल्तान का कढ़ाई का एक कारखाना था, जिसमें 4000 रेशम कर्मी कार्य करते थे। जो खिलअतो और उपहार के लिए विभिन्न प्रकार के वस्त्र तैयार करते थे।

बिहार में रेशम उद्योग

बिहार के कुल रेशम उत्पादन का लगभग 16 प्रतिशत भारत में उत्पन्न होता है। भारत में रेशम की चार किस्मों का उत्पादन होता है। मलबरी किस्म के रेशम का उत्पादन सर्वाधिक 91.7 प्रतिशत, रेशम का उत्पादन 6.47 प्रतिशत, तसर रेशम 1.41 प्रतिशत तथा मूंगा किस्म की रेशम का 0.5 प्रतिशत उत्पादन होता है। बिहार में रेशम उद्योग गृह उद्योग की भांति रहा है।

रेशम मुख्यतः दो प्रकार का होता है।

1. असली रेशम
2. नकली रेशम या कृत्रिम रेशम।

असली रेशम कई जाति के रेशम के कीड़ों से प्राप्त किया जाता है। रेशम के कीड़े अरण्डी या शहतूत के पेड़ों के पौधे के पत्तों पर पाले जाते हैं। शहतूत के पेड़ों पर चलने वाले कीड़ों से कुल रेशम का 80 प्रतिशत प्राप्त होता है। अर्द्ध पालतू कीड़ों से तसर रेशम प्राप्त होता है। शहतूत के वृक्ष 1000 मीटर की ऊँचाई पर 60 सेंमी. 21 सेंटीग्रेड तापमान पर 70 प्रतिशत आर्द्रता वाले क्षेत्रों में अधिकृत से होता है।

नकली रेशम लकड़ी का लुगदी तथा मुलायम लकड़ियों से रासायनिक क्रिया द्वारा तैयार होता है। इसे विस्कोस प्रोसेस कहते है। रूई, जूट, घास, फूस से भी कृत्रिम रेशम तैयार किया जाता है। इसे एसिटेट प्रोसेस कहते हैं। इस उद्योग को अनेक रासायनिक पदार्थ कास्टिक सोडा, सलफ्यूरिक अम्ल, सोडियम सल्फेट आदि की आवश्यकता पड़ती है। गन्ने की खोई से भी कृत्रिम रेशम बनाई जाती है। इस उद्योग के लिए उच्च तकनीक तका कुशल श्रमिकों की आवश्यकता पड़ती है।

बिहार में रेशम उद्योग प्राचीन और मध्य काल में फलता–फूलता रहा है। चूंकि रेशमी वस्त्र कीमती होते हैं। अतः इनका प्रयोग उच्च वर्गो समृद्ध लोगों तक ही सीमित था। रेशमी वस्त्रों को धारण करना प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता था। मुगल शासकों में रेशमी वस्त्रों के प्रति काफी आकर्षण रहता था। 'ममांलिक उल अमसार' के लेखक शिहाबुधीन अल उमरी ने चौदहवीं सदी के पूर्वार्द्ध में राजाजाय रेशम के वस्त्रों पर होने वाले कार्यो का उल्लेख किया है। उसके अनुसार सुल्तान का कढ़ाई का एक कारखाना था, जिसमें 4000 रेशम कर्मी कार्य करते थे। जो खिलअतो और उपहार के लिए विभिन्न प्रकार के वस्त्र तैयार करते थे।

रेशम वस्त्र उद्योग और ईस्ट इंडिया कंपनी

18वीं सदी के उतरार्द्ध में ईस्ट इंडिया कंपनी कच्चे रेशम के उत्पादन पर अधिक जोर देने लगी। कंपनी की इसी नीति के कारण बिहार के विभिन्न जिलों जैसे भागलपुर, पूर्णिया, पटना, गया, शाहाबाद में कच्चे रेशम का उत्पादन पर्याप्त मात्रा में होने लगा। लेकिन आगे चलकर 18वीं सदी के अंत में कंपनी की उदासीनता के कारण रेशम उद्योग को गहरा धक्का लगा। बुकानन के सर्वे के अनुसार पूर्णिया जिले में मात्रा 125 घर बुनकरों का था, जो रेशम बनाने के उद्योग में लगे हुए थे।

पटना जिले में और विशेषकर गया, फतुआ और नवादा में विभिन्न प्रकार के रेशम के कपड़े बनाए जाते थे। जिसमें सेला एक प्रकार का शुद्ध रेशम का कपड़ा सबसे लोकप्रिय था। यह व्यापक रूप से लपटन के रूप में स्त्रियों के पेटीकोट में व्यवहार में आता था। महाराष्ट्र के तीर्थयात्री जो अक्सर प्रायः धार्मिक कार्यो में आते थे वे ऐसे ही रेशम के वस्त्र बहुत पसंद करते थे और उसे बड़ी संख्या में प्रतिवर्ष खरीदते थे।

रेशम उद्योग की संभावनायें

व्यक्ति रेशम उत्पादों के प्रति हमेशा जिज्ञासु रहा है। वस्त्रों की रानी के नाम से विख्यात रेशम विलासिता मनोहरता विशिष्टता एवं आराम का सूचक है। मानव जाति ने अद्वितीय आभा वाले इस झिलमिलाते

वस्त्र को चीनी सामश्री शीलिंग टी द्वारा अपने चाय के प्याले में इसके पता लगने के काल से ही चाहा है यद्वपि इसे अन्य प्राकृति एवं बनावटी वस्त्रों की कई गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ा फिर भी शताब्दियों से वस्त्रों की रानी के रूप में विख्यात इसने निर्विवाद रूप से अपना स्थान बनाए रखा है। प्राकृतिक आभा रंगाई एवं जीवन्त रंगों के प्रति अंतर्निहित आकर्षण उच्च अवशोषण क्षमता हल्का लचकदार एवं उत्कृष्ट वस्त्रा–विन्यास जैसे श्रेष्ठ गुणों ने रेशम को विश्व में किसी सुअवसर का अत्यंत सम्मोहक एवं अपरिहार्य साथी बना दिया है।

रेशम रसायन की भाषा में रेशमकीट के रूप में विख्यात इल्ली द्वारा निकाले जाने वाले एक प्रोटीन से बना होता है। ये रेशमकीट कुछ विशेष खाद्ध पौधों पर पलते हैं तथा अपने जीवन को बनाए रखने के लिए सुरक्षा कवच के रूप में कोसों का निर्माण करते हैं। रेशमकीट का जीवन चक्र 4 चरणों का होता है अण्डा इल्ली प्यूपा तथा शलभ। व्यक्ति रेशम प्राप्त करने के लिए इसके जीवन–चक्र में कोसों के चरण पर अवरोध डालता है जिससे व्यावसायिक महत्व का अटूट तन्तु निकाला जाता है तथा इसका इस्तेमाल वस्त्र की बुनाई में किया जाता है।

बिहार में मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने कहा कि राज्य में रेशम उद्योग के आगे बढ़ने के लिए पूरी संभावनायें है। मुख्यमंत्री सचिवालय स्थित संवाद सभाकक्ष में आयोजित उद्यमी पंचायत की बैठक की अध्यक्षता करते हुए नीतिश ने कहा कि राज्य में हैंडलूम, पॉवरलूम और रेशम के क्षेत्र में रोजगार की काफी संभावनाएं हैं। उन्होंने पूर्व में की गयी अपनी सेवा यात्रा की चर्चा करते हुए उस दौरान रेशम उत्पादित इलाकों का भी दौरा किया था। उस दौरान नई नीति बनाने का सुझाव दिया था। नीति बनी लेकिन क्रियान्वयन में थोड़ा समय लगा। इस क्षेत्र में आगे बढ़ने की पूरी संभावना है। जीविका को ग्रामीण विकास विभाग को और गति देनी होगी। जीविका के माध्यम से रेशम के रोजगार की काफी संभावना है।

नीतिश ने कहा कि तसर के उद्योग के लिए महिलाओं का 661 उपकरण दिए जा चुके हैं, जिससे और भी प्रभावकारी परिणाम सामने आयेंगे। बैठक के दौरान हस्तकरघा, विद्युत करघा, बुनकर, रंगरेज, सिल्क व्यवसाय से जुड़े प्रतिनिधियों ने अपनी समस्याओं को मुख्यमंत्री के समक्ष रखा तथा उद्यमियों द्वारा अच्छे सुझाव दिए गए। हैंडलूम को ऑपरेटिव सोसायटी की चर्चा करते हुए नीतिश ने कहा, इसकी संख्या बढ़ाने की जरूरत है, आंकड़ों को अपडेट करने की जरूरत है, जिससे आपको फायदा होगा, आपका संगठन मजबूत होगा। चार रीजनल यूनियन है, जिसको और बढ़ाने की जरूरत है। जो भी प्राथमिक चीजें है, उसमें हमारा पूरा सहयोग रहेगा।

उन्होंने कहा कि उद्योग एवं सहकारिता विभाग की विकास आयुक्त की अध्यक्षता में एक बैठक होगी जिसमें शीघ्र ही समस्याओं का निराकरण किया जाएगा। रंगरेजों के बारे में नीतिश ने कहा कि उनकी अपनी पहचान है। बुनकर लोग रंगरेजों से आपसी संबंध को बेहतर बनाकर रोजगार की संभावनाओं को बढ़ा सकते हैं। रंगरेजों की एक समय बहुत दयनीय स्थिति हो गई थी जिन्हें अपने जीविकोपार्जन के लिए तरह–तरह की परेशानियों से गुजरना पड़ता था। बुनकर क्षेत्र से जोड़कर रंगरेजों में रोजगार के अवसर को बढ़ाया जा सकता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि इन क्षेत्रों में रोजगार की काफी संभावनाएं हैं। उन्होंने कहा, आप सभी अपने उद्योग की तरफ उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के उपाय कीजिए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हैंडलूम और पॉवरलूम क्षेत्र को और मजबूत करेंगे। भागलपुर में चंपानगर जहां बिजली भुगतान की समस्या को हल करने के लिए नए कनेक्शन दिये जायेंगे, इसके लिये 15 नवंबर से कैंप लगाया जाएगा। साथ ही पुराने बकाए के लिए वन टाइम सेटलमेंट की कार्रवाई की जाएगीं जो भी सहायता होगी सरकार करेगी। ज्यादा से ज्यादा लोगों को रोजगार मिले सरकार की ये कोशिश है। उन्होंने कहा कि मुख्य सचिव के स्तर पर दो महीने के बाद कार्यो के प्रगति की समीक्षा की जाएगी।

निष्कर्षः

पटना में सिल्क के व्यापारी बड़ी संख्या में थे। सतगांव क्विल्ट और तशर सिल्क के कपड़े निचले बंगाल के क्षेत्रों से मंगाए जाते थे। इनमें से कुछ क्विल्ट अंग्रेजों को काफी पसंद आते थे। लेकिन सिल्क का व्यापार इंगलैंड की मांग पर आधारित था। बंगाल के मालदा से तीन प्रकार के सिल्क के कपड़े आते थे और बोगरा जिला के शेरपुर से एक अत्यन्त महीन रंगीत सिल्क का कपड़ा आता था। उड़ीसा से पटना विभिन्न

किस्म के लिनेन आते थे। जिसे 'अमग्रीश' और 'चार खाना' कहते थे। पटना में सबसे बेहतर सिल्क कपड़े के रूप में कुर्ताबीस या अगहवनीस था, जो सिल्क, सिल्वर और गोल्ड धागे के डिजाइन से बना रहता था।

संदर्भ–सूची

1. जे. एम. सरकार, इलिन्सेज ऑफ मेडियावल बिहार इकानामी पृष्ठ–73
2. जे. एन करमार (2015), द काटन ट्रेड ऑफ पटना इन सेवेन्टीज सेंन्चुरी इंडियन हिस्टोरिक्ल क्वार्टली भाग दस पृष्ठ–38
3. जे. एम. सरकार (1939), दे सिल्क ट्रेड ऑफ पटना, इन अर्ली सेवेन्टीज सेन्चुरी इंडिया न क्वार्टली भाग 15, पृष्ठ–208
4. मुखर्जी आर. के. (2005), द इकामिक हिस्ट्री आफ बिहार, पृष्ठ– 152–153
5. एच. के. सिन्हा (2000), इकानामिक हिस्ट्री ऑफ बंगाल भाग–1, पृष्ठ–183
6. एच. आर. घोषाल (1966), द इकोनामिक ट्राजिशन इन बंगाल प्रेसीडेन्सी कलकता, पृष्ठ–54
7. भगवती शरण सिंह (2006), आस्पेक्टस ऑफ इंडस्ट्रीज इन बिहार पटना, पृष्ठ–34